Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मध्य प्रदेश के काष्ठ शिल्प का आधार

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

मध्य प्रदेश के काष्ठ शिल्प का आधार

Dr. Rituraj Vashisht

Researcher Fine Art

----------X----------

शिल्प मनुष्य के आन्तरिक और बाह्य अंलकरण है। मनुष्य की प्रवल सृजनेच्छा के कारण जगत में एक दूसरी ही सृष्टि का सूत्रपात हुआ, जो कला साहित्य और शिल्प की संज्ञा से अभिहित हुई। मानव निर्मित सृष्टि की प्रेरणा के मूल में प्रकृति रही है। मनुष्य एंव प्रकृति में अन्त संम्बध और आत्म निर्भरता पुरातन है। मनुष्य ने जब पृथ्वी को अपने रहने लायक अपने ज्ञान के आधार बनाया तब अपने जीवन यापन के सारे उपादान प्रकृति से ही अर्जित किये। प्रकृति से ही मानव में बुनियादी सौन्दर्य का अविर्भाव हुआ इसी सौन्दर्य को मनुष्य ने अपनी कृतियों में सृजित करके अपने सौन्दर्य बोध को प्रकट किया इसी क्रम में आदिमानव ने सहज चित्र एवं शिल्प के माध्यम से अभिव्यक्त करता आया है। आजकल मानव द्वारा निर्मित शिल्प सौन्दर्य को ही नही अपितु मानव की कला एंव संस्कृति के प्रतिनिधि है।

काष्ठ शिल्प परम्परा की जडे मनुष्य के प्रांरभिक विकास के चरणों में देखी जा सकती है। लकड़ी में विभिन्न रुपाकारो की संम्भावना की तलाश मनुष्य ने आदिम युग मे ही कर ली थी। गुफाओं से निकलकर जब मनुष्य मैंदानो मे मकान बनाकत रहने लगा तब से भिन्न एंव काष्ठ कला के सही उद्भव की परिकल्पना की जा सकती है। विकसित मानव सिं मृतत्व शास्त्रियों ने होमोसेपियन्स मानव की संज्ञा दी है। पाषाण युगीन मानव जिसे अपनी आवश्यकता के अनुरुप पत्थर की कुल्हाड़ी एंव अन्य औजार बनाये थे वे उनकी शिल्प की भी प्रतिपूर्ति करते थे पत्थर या हड्डी में छेदकर मूठ लगाने का कार्य मानव की कला एंव दूसरा आयाम था लकड़ी के पहिये के आविष्कार से मानव की विकास गति बड़ी। गृह निमार्ण मे बांस की लकड़ी की प्राथिमिक भूमिका थी लकड़ी को मन चाहे आकार मे बदलने मे मनुष्य सक्षम था, इसलिये उसने लकड़ी मे स्थापत्य के साथ मूर्ति कला और अलंकरण का सरल माध्यम लकड़ी को ही बनाया। विश्व के प्राचीन भवनों और मंदिरों के स्थापत्य मे पत्थर के साथ काष्ठ की मूर्तियों और अलंकरणों आदि का चरम वैभव देखा जा सकता है।

डॉ. श्यामाचरण दुबे ने काष्ठ शिल्प की विश्व सभ्यता के स्थिति मे स्पष्ट करते हुये लिखा है लकड़ी तथा हाथी दांत की खुदाई के नीग्रो प्रजाति की अनेक समूहो को विशेषज्ञता प्राप्त हैं म.प्र. की काष्ठ मूर्तिया और चेहरे (मास्क) प्रसिद्व है। उनम से कुछ यथा तथ्यवादी हाते है, किन्तु अनेक काष्ठ मूर्तियो और चेहरो का निमार्ण विशिष्ट शैलियों मे किया जाता है। सादे काले रंग से लेकर, चमक दार पीले, लाल,नीले और सफेद रंगो का प्रयोग इन मूर्तियों अैर चेहरो के रंगने मे किया जाता है। आदिवासियो मे लिये पूणक न होते हुये भी वह अपने पितरो की आकृतियां बनाते है। उनमे लकड़ी के खिलौनो पर खुदाई एंव नक्काशी बारीक काम भी किया जाता है। म.प्र. की जनजातियो काष्ठ शिल्प की तुलना विश्व काष्ठ कला से की जा सकती है। पैाराणिक अरख्यानो मे विश्व के प्रथम काष्ठ शिल्प के आचर्य भगवान विश्वकर्मा है जो देवताओ के वास्तु शिल्पी थे हस्तिनापुर का प्रथम वास्तु शिल्प विश्वकर्मा ने तैयार किया था जगन्नाथ के प्रसिद्व मन्दिर की काष्ठ मूर्तियो का शिल्प आचार्य विश्वकर्मा ने बनाया जो आज थी उसी रुप मे प्रतिष्ठित और पूजित है विश्वकर्मा ने जगन्नाथ सुमद्रा और बलमद्र की मूर्तियो के शिल्प से कला के नये लोक शिल्प कर प्रतिष्ठा की इससे काष्ठ शिल्पियों को समाज मे मान सम्मान स्थापित हुआ आज भी लोहाकार काष्ठ कार , शिल्पकार, स्वर्णकार, सिलावट और अन्य शिल्पकार अपने आप को विश्वकर्मा की संतान कहने मे गर्व का अनुभव करते है।

असुरो के वास्तु शिल्पी मय दानव मान जाता है, जिसने असुरों के लिये सुन्दर नगरी बसाई थी। विश्वकर्मा जितने उत्कृष्ट वास्तुविद थे उतने ही मय दानव की वास्तकला के रचना विशेषज्ञ थे दोंनो की वास्तु कला का प्रभाव भारतीय स्थापत्य कला पर देखा जाता है।

शिल्पों की परम्परा के निमार्ण और निर्वाह मे पुरुष के साथ स्त्री का सर्वोपरि स्थान रहा है। अपनी सृजन की स्वभाविक प्रतिभा और कल्पना शीलता से स्त्री ने इस संसार को कई उपयागी शिल्प दिये है।

भारतीय लोक जीवन मे लकड़ी के महत्व को सर्व स्वीकार किया है। जनजातियो अवधारणा मे वृक्षो मे उनके देवताओ का वास होता हे विवाह स्तंम्भ, मगरोहन और मण्डप की लकड़ी काटने कें पूर्व वृक्ष की पूजा की जाती है। सागौन की लकड़ी मकान और मूर्ति शिल्प के लिये सबसे अधिक उपयुक्त है शीशम और खेर की लकड़ी सबसे कठोर और भारी मानी जाती है। अखरोट की लकड़ी पर खुदाई सबसे अच्छी होती है।

चन्दन, आम, नीम, सागोन, शीशम, हन्दू आदि की लकड़ी के खिलोने, मूर्तिया, दैनिक उपयोगी वस्तु एंव उपकरण आदि परम्परा से बनाये जाते है।

आदिम समूहों मे काष्ठ के विभिन्न अभिप्राय और सृजनात्मक रुपाकार करने की प्रवृति सहज देखी जा सकती है, जो आदिम युग से आज तक चली आ रही है। म.प्र. की जन जातियों मे भी काष्ठ शिल्प की आदिम परम्परा मौजूद है। जो कि मृतक स्तंम्भ, काष्ठ स्तंम्भ, मगरोहन, विवाह स्तंम्भ, तीर धनुष, घर के साजो सामान, वैलगाड़ी, पालने, खाट, मूर्तिया इत्यादि को बड़े ही सरल एंव सहज आकृतियो के द्वारा सुशोभित करते है।

www.ignited.in

प्रदेश को अलग–2 जन जाति संस्कृति परिक्षेत्र में जाना जाता है। पश्चिमी जनजाति सांस्कृतिक परिक्षेत्र में धार, झाबुआ, खरगोन, मण्डला, वैतूल, सिवनी, छिन्दवाड़ा, बालाघाट, सागर, शहडोल जिले शामिल है। जिसमें गोण्ड, कारकू, कोल और वैगा जन जातियां निवास करती है। उत्तर पूर्वीय जन जातिय परिक्षेत्र मे म.प्र. का सीधी और सीमावर्ती जिलो के कुछ भाग सम्मिलित है। इस क्षेत्र की प्रमुख जन जाति संवर और सहारिया है। आबादी की दृष्टि से झाबुआ प्रदेश का सबसे बड़ा आदिवासी जिला है।

इस संस्कृति को समझने मे जन जाति के पर्व–त्यौहार देवी–देवता पूजा अनुष्ठान गीत संगीत नृत्य कथा किस्से शिल्प आदि की जीवन परंम्पराये अत्यधिक सहायक होगी आदिवासी शिल्पा मात्र शोभा की वस्तु नहीं हैं। उसमे अनुष्ठानिक मिथिकीय गूढ़ अभिप्राय भी होते है। शिल्प उनकी आदिम संस्कृति को अभिव्यक्त करते है।

म.प्र. के आदिवासी अंचलो मण्डला, वैतूल, होशगांबाद, धार, झाबुआ, पन्ना एंव अन्य जिलो में काष्ठ शिल्प की प्राचीन और समृद्ध परम्परा दिखाई देती है इन अंचलो मे कई आदिवासी परिवारो मे काष्ठ कर्म परम्परा से किया जाता है।

कलात्मक डिजाईनदार कंघिया, तम्बाकू रखने की डिब्बी विभिन्न आकार के मुखोटे, अंलकृत घंटी, थाले, कलात्मक दिवाण्या, देवी देवताओं की मूर्तियां, विभिन्न पशु पक्षियों की कला कृतिया एंव खिलौने, लकड़ी के बर्तन, नाव, सूपा टोकनी, रथ, पालकी आदि प्रमुख है।